कहाँ गई इंसान की इंसानियत..!

ईश्वर ने भी मानव का सृजन किया, उसे पश्चाताप हुआ होगा कि इसी दुनिया को आज के मानव ने विकृत बना दिया। जहाँ अनीति ही नीति बन गई हो, जहाँ धन की ताकत धर्म को नीचे ले जा रही हो, जहाँ ऊँचे स्थान पर बैठे मानव अपने आदर्श के साथ न्याय न कर पा रहे हों, जहाँ सज्जन बनना मूर्खता और अपराध मान लिया जाता हो, वहाँ 'सच्चा इंसान' मानवजाति को कहाँ से मिले!

पशुओं का मेला लगा हुआ है, घोड़े, बैल, भैंस व बकरे आदि को बेंचा जा रहा है। बेचने वाले हर एक पशु की विशेषताएं व उनकी काबीलियत वर्णन कर रहे हैं। खरीदने के लिए मोलभाव चल रहा है।

- ब्र. कु. गंगाधर

उससे थोड़ी दूर पर एक आदमी बड़ा बोर्ड लगाकर बैठा है। बोर्ड में लिखा है: ``मुझे इंसान चाहिए'', ``जो कहोगे वही दाम मिलेगा।''

गरीब तथा खरीदने वाले लोग पहुंच जाते हैं और पूछते हैं कि ``हम बिकने के लिए तैयार हैं; लेकिन काम क्या करना है?''

उसमें से एक ने कहा : ``मेरा शरीर कमज़ोर है... मैं छः घण्टे से ज़्यादा काम नहीं कर पाऊंगा।''

दूसरे ने कहा : ``मैं बेकार हूँ लेकिन मस्ती से जीना चाहता हूँ... चार घण्टे से ज़्यादा काम मेरे बस की बात नहीं।''

तीसरे ने कहा: ``मैं सरकारी नौकर था... काम टालने की मेरी आदत है। इसलिए आज का काम दूसरे दिन पर ले जाऊंगा, तो फिर आप बोलना नहीं कि मैं कामचोर हूँ।''

और एक ने कहा कि मैं तो असफल राजनीतिज्ञ हूँ। राजनीति में प्रवृत्त था, तब ढूंढ़-ढूंढ़कर सत्ता पक्ष की टीका करने का मुद्दा तैयार करता था, इसलिए कोई प्रचार-प्रसार का काम हो तो मुझे कहना। विरोध करने वालों का मुँह बंद कर दूंगा। हाँ उसके लिए आपको ज़्यादा सैलरी देनी होगी।

वो आदमी सबकी बात सुनता और ठहरने को कहता। ठहरे हुए आदमियों को चाय-नास्ता और भोजन कराता, इसलिए सब खुश हो जाते। उनको लगता कि ऐसा दरियादिल `बॉस' मिल जाये तो मज़ा आ जाये।

शाम को साढ़े पाँच बजे तक सारे तंदुरुस्त पशु बिक गये। बाकी थोड़े मरियल जैसे कमज़ोर पशु रह गये, उन्हें तो कोई मुफ्त में भी ले जाने को तैयार नहीं था। वो आदमी जिसने बोर्ड लगाया था ``इंसान चाहिए'' का, उसने बोर्ड उतार दिया। ठहरे हुए आदमियों को आशा थी कि अब पसंद किये हुए आदमियों की सूचि बनाई जाएगी।

वो आदमी जिसने सभी को ठहराया था, उसने सभी को कहा कि आपकी मुझे ज़रूरत नहीं है।''

`` लेकिन किसलिए? क्या हम आपको मानव जैसे नहीं लगते?'' ठहरे हुए सभी ने एक साथ मिलकर आवाज़ से कहा! `` मुझे जो मानव चाहिए था, जिसे दूसरे शब्द में कहें तो ऐसे इंसान की ज़रूरत थी, जिसे दाम नहीं काम से प्यार हो, ऐसा इंसान जो परिश्रम को परमेश्वर मानता हो और काम के घण्टे का हिसाब न रखता हो। ऐसा आदमी जिसे कामचोरी और बहानेबाज़ी ने बेकार न कर दिया हो। एक ऐसा आदमी जो आज का काम कल पर न टालता हो, बल्कि आज का काम अभी ही कर देने की इच्छा रखता हो।''

``मुझे ज़रूरत है, ऐसे आदमी की जो शत्रु के भी सद्गुणों की प्रशंसा करता हो। विरोधीपक्ष या सत्तापक्ष की निंदा में नहीं, लेकिन उनके सत्कर्मों को दिल से स्वीकारता हो।''

मित्रों, आज सबकुछ मिलता है, लेकिन `इंसान' नहीं मिलता! हिंसा, हत्या, दूराचार, भ्रष्टाचार, निंदा, बहानेबाज़ी, धोखेबाज़ी, घृणा, बेईमानी, ये सब मनुष्य की पहचान बन गई है।

ईश्वर ने भी मानव का सृजन किया, उसे पश्चाताप हुआ होगा कि इसी दुनिया को आज के मानव ने विकृत बना दिया। जहाँ अनीति ही नीति बन गई हो, जहाँ धन की ताकत धर्म गुरुओं को नचा रही हो, जहाँ ऊँचे स्थान पर बैठे लोग

- शेष पेज 8 पर

हमें यहाँ फरिश्ते की तरह रहना व कर्म करना है

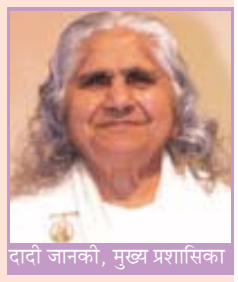

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

सभी मिलकर जब ओम् शान्ति बोलते हैं तो अच्छा लगता है, बहुत खुशी होती है। वाह! वाह! डायमण्ड हॉल फुल है। अच्छा है। कितने प्यारे लगते हैं। अभी मैं क्या बताऊं मेरे दिल में क्या है? दिल में है दिलाराम। दिल में दिलाराम होने से सच्चाई और प्रेम है तो खुशी बहुत है। अभी हर मुरली में अव्यक्त मास का विशेष अभ्यास रोज़ाना मुरली के स्लोगन के बाद लिखा हुआ आता है, जो दिन भर में देखते हैं। चेहरा और चलन, यह आँखें दिखाती हैं। बाबा ने ब्रह्मा तन से हमको पक्का ब्राह्मण सो देवता बनाने के लिए इतनी पालना, पढ़ाई दी है। जब मुरली पढ़ते हैं तो क्या लगता है? मैं साक्षी होकर बोलती हूँ, जो भी बाबा हमारे से चाहता है, कोई भी परिस्थिति होती नहीं है जब स्वस्थिति है। अटेन्शन है तो टेन्शन से फ्री हैं। कोई टेन्शन की बात आई तो उसके आगे सिर्फ ए लगा दो तो कोई टेन्शन नहीं होगा। अटेन्शन है तो बाबा मेरा साथी है और साक्षी होकर के प्ले करो। यह पढ़ाई बहुत अच्छी है। या तो कहेंगे बाबा या कहेंगे ड्रामा! जैसे यह दो ऑखें हैं ना, तो दोनों ऑखों में बाबा और ड्रामा। हमारी दृष्टि में बाबा और ड्रामा ही समाया हुआ है। जब कोई भी हमारे से मिलते हैं तो सभी को देखके बहुत खुशी होती है। भले हॉल में कितने भी भाई बहनें बैठे हैं सभी का मन शान्त और खुश है। बाबा कहते हैं तो वर्सा भी याद आता है। क्या वर्से में मिला है? मुक्ति जीवनमुक्ति। जीवन में होते हुए भी न्यारे हैं, बाबा के प्यारे हैं। बाबा शिक्षक भी है, रक्षक भी है। वन्डरफुल है बाबा। जो आत्मायें डायरेक्ट परमात्मा से पालना लेते, पढ़ाई पढ़ते अपनी स्थिति पर ध्यान रखती हैं वे विकर्माजीत, कर्मातीत और अव्यक्त स्थिति की ओर बढ़ रही हैं क्योंकि बाबा को फॉलो करना है ना। ऐसों को देख मीठा बाबा, प्यारा बाबा, प्यार का सागर बन बहुत प्यार लुटाता है, प्रैक्टिकल देखते हैं। लगता है आप सब ज्ञान सागर, प्रेम के सागर में समाये हुए बैठे हो। वन्डरफुल बाबा, वन्डरफुल बाबा का ड्रामा।

दिन रात शान्ति की शक्ति का वातावरण, वायुमण्डल, वायब्रेशन फैलाना है। आजकल वायब्रेशन भी बहुत अच्छा दिलों को खींचता है। बाबा मिलन में क्या फायदा है? अटेन्शन है कि बाबा की दृष्टि लेने को मिलती है, बाबा क्या सुना रहे हैं, उस पर गहराई से ध्यान रहता है। बाबा ने कार्य करते निश्चिंत रहने का भी वरदान दिया हुआ है, यही तो फायदा है। तो मेरे दिल में क्या है, मन में क्या है, संस्कार में क्या है? मन-बुद्धि-संस्कार में दिन-रात, स्वप्न व संकल्पों में भी बाबा और परिवार ही घूमता है। जिसको जो बनना है, जैसा बनना है वही पुरुषार्थ करेंगे, जब देवता बनेंगे सतयुग होगा तब नहीं ऐसा पुरुषार्थ कर सकेंगे। अन्दर में नशा चढ़ा हुआ है, आज ब्राह्मण हैं कल देवता बनेंगे। इसके पहले बनना है फरिश्ता, जो धरती पर पाँव न हो। आवाज़ से परे रहने की नेचर हो माना पहले दृष्टि फिर मुख से बोलेंगे। ऐसा बोलेंगे जो भूले नहीं। हमारे को सिर्फ प्लेन बुद्धि रखनी है तब ही बाबा हमारा रक्षक है।

मैं हूँ आत्मा शरीर से न्यारा... कितना अच्छा लगता है। अभी देखो यहाँ कितने क्लासेज़, वैरायटी क्लासेज़ मिलते हैं। हम सबसे बड़े से बड़ी भूल यह हुई जो हम अपने धर्म को ही भूल गये। गीता में भी है जब जब धर्मग्लानि होती है तब मैं आता हूँ। हम असुल देवता धर्म के थे, अब फिर से देवता बन रहे हैं। वन्डर है, बाबा स्मृति दिलाता है। स्मृति, वृत्ति ऐसी है जो ज़्यादा सोचने की ज़रूरत नहीं है। मैं कौन, मेरा कौन, मुझे बाबा क्या से क्या बनने के लिये कहता है! जैसे तुम बने हो ना वैसे बनाओ। बाप के समान खिदमदगार बनो। हम भी अपने आपसे पूछते हैं सारी लाइफ क्या है? बाबा के साथ रहे हैं। साकार में भी साथ रहे हैं।

मुरली को लगन से पढ़ो, सारे सवालों के जवाब मिलेंगे

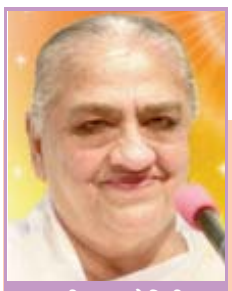

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

ब्राह्मण जीवन का जीयदान है - मुरली। ब्राह्मण जीवन की श्रीमत है - मुरली क्योंकि बाबा कहते हैं श्रीमत पर चलो, तो वह श्रीमत कौनसी है? क्या बड़ी दादी कहती, वही श्रीमत है? हमारी निमित्त टीचर जो कहती है, वही श्रीमत है, क्या श्रीमत है? लेकिन यह हमारी दादी जी हैं या निमित्त टीचर्स हैं, वह भी आपको अगर राय देंगे तो किस आधार पर देंगे? मुरली के आधार पर ही देंगे ना! बाबा ने यह कहा है, ऐसे ही कहेंगे ना! मैं आपको ऐसे कहती हूँ कि यह करो, यह तो नहीं कह सकते ना! बाबा ने ऐसे श्रीमत दी है, तो वह श्रीमत हमारी है - मुरली। और आप सबको अनुभव होगा कि मुरली की श्रीमत में इतनी ताकत है, अगर आपको कोई भी दवाई मन्सा की, वाचा की चाहिए, कर्मणा में योगी बनने की चाहिए, सम्बन्ध-सम्पर्क में सबसे यथार्थ चलन में चलें, सम्बन्ध में आयें, कोई भी दवाई अगर आपको चाहिए, तो कोई भी मुरली आप हाथ में उठा लो। उसी मुरली में वह मिल जायेगी। तो मुरलियों की बुक या मुरलियों की कुछ कॉपीज़ हर एक को अपने पास रखनी चाहिए, यह हमारी बहुत आवश्यक चीज़ है।

तो यह मन के बीमारियों की सब दवाइयां मुरली में हैं। किसी भी प्रकार के सवालों का जवाब मुरली में मिल सकता है। मन चंचल है, विचलित है उसको अचल बनाने के लिए अगर आप कोई भी मुरली विधिपूर्वक और लगन से पढ़ो तो आपको सब सवालों का जवाब मिल जायेगा।

आप भाग्यवान हो जो यह थोड़े से दिन आपको बाबा ने कमाई जमा करने के लिए दिये हैं क्योंकि फिर भी वहां तो वायुमण्डल दूसरा यानि बाहर का होता है। यहां के वायुमण्डल में तो जहां जाओ वहां एक ही बात है। यहां तो एक ही काम है अपना खज़ाना जमा करना और क्या काम है! जो ड्यूटी पर आते हैं वह अपनी ड्यूटी पर जाते हैं, बाकी आप लोग जो रिफ्रेश होने आते हैं, उनको तो और कोई काम नहीं है। और बाबा ने इतना अच्छा सहज तरीका सुनाया है, मुरली सुनी तो समझो मन की खुराक खाई। जैसे तन के लिए नाश्ता खाते हैं तो ताकत आती है ना! ऐसे मन को मुरली सुनने से रिफ्रेशमेन्ट मिलती है।

यह बुज़ुर्ग मातायें भी हमारे विश्व विद्यालय का श्रृंगार हैं, माताओं को देख करके बाबा इतना खुश होता था! मातायें कहती बाबा हम पहले आते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन बाबा कहता अभी वह ड्रामा तो बदल नहीं सकता। वह तो ड्रामा में लिपट गया ना इसीलिए बाबा कहता था, माताओं को मैं फ्री देता हूँ। खास माताओं के ऊपर रहम करता हूँ कि माताओं को इतनी प्वाइंट्स याद रखने की ज़रूरत नहीं है। माताओं को और कुछ याद भी न रहे तो कोई बात नहीं, तुमको माफ कर दूंगा, कुछ नहीं पूछूंगा। ड्रामा क्या है बताओ, 84 जन्म क्या है? यह सब तुमको फ्री है, इतनी मेहरबानी बाबा माताओं के ऊपर करता है। बाबा कहता था चलो, एक अक्षर तो याद रख सकते हैं। ऐसे पोत्रे-धोत्रे की बात घण्टों बैठके सुनायेंगी लेकिन मुरली की प्वाइन्ट थोड़ी गुह्य होती है इसीलिए भूल जाती है। तो बाबा ने कहा चलो भूल जाती है, कोई हर्जा नहीं लेकिन एक अक्षर तो याद रख सकती हो कि नहीं? वह एक अक्षर है - बाबा। बस। यह याद रख सकते हो? राम, राम, राम तो बहुत बारी किया लेकिन वह मरा, मरा, मरा हो गया। लेकिन बाबा, बाबा शब्द तो याद रख सकती हो कि नहीं?

बाबा कहता है जब बाबा शब्द बोलेंगे, तो बाबा क्या देता है, वह भी याद आयेगा ना! बाबा से प्यार क्यों होता है? किसी को भी पिता से प्यार क्यों होता है? वर्सा मिलता है, तभी प्यार होता है। तो बाबा कहते हैं जब बाबा शब्द याद रखेंगी तो वर्सा तो याद आयेगा ही। और वर्सा क्या याद आयेगा? हम प्रिन्स-प्रिन्सेस बनेंगी। बाबा कहने से पवित्रता का वर्सा आपको अवश्य मिलेगा क्योंकि बाबा देता ही पवित्रता है और देता ही क्या है! इसीलिए एक बाबा शब्द कभी नहीं भूलो। बस। बाबा कहा बेड़ा पार। यह क्या मुश्किल है? बाबा की श्रीमत तो याद आयेगी ही। मरने तक बाबा शब्द मुख से निकले। बस।